प्रातः क्लास 21/12/68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठे–2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप बैठ रोज़–2 समझाते हैं। यह तो बच्चों को समझाया है ज्ञान भक्ति वैराग्य। यह सृष्टि का चक्र कैसा बना हुआ है। तुम बच्चों को हद और बेहद से पार जाना है। बाप तो हद और बेहद से पार है। उनका भी अर्थ समझाना चाहिए। रूहानी बाप बैठ समझाते हैं। वह भी टॉपिक समझाई है कि ज्ञान भक्ति पीछे है वैराग्य। ज्ञान कहा जाता है दिन को। जब कि नई दुनियां है। उसमें भक्ति ज्ञान है नहीं। वह है हद की दुनिया। क्योंकि वहाँ बहुत थोड़े होते हैं। फिर आस्ते–2 वृद्धि को पाते हैं। आधा समय बाद भक्ति शुरू होती है। वहां सन्यास धर्म होता ही नहीं। सन्यास वा त्याग होता ही नहीं। फिर बाद में सृष्टि की वृद्धि होती है। ऊपर से आत्माएं आती हैं। यहां वृद्धि होती रहती है। हद से शुरू होकर बेहद में जाती है। बाप की तो हद और बेहद से पार दृष्टि जाती है। जानते हैं हद में कितने थोड़े बच्चे होते हैं फिर रावण राज्य में कितने वृद्धि हो जाते हैं। हद में 9 लाख और बेहद में हैं 500 करोड़। कहाँ 9 लाख, कहाँ 500 करोड़। अभी तुमको हद बेहद से भी पार जाना है। सतयुग में कितनी छोटी दुनियां है। वहां सन्यास वा वैराग्य आदि होता ही नहीं बाद में फिर द्वापर से लेकर और धर्म शुरू होता है। सन्यास धर्म भी होता है। जो घर–बार का सन्यास करते हैं। सभी को जानना तो चाहिए ना। उनको कहा जाता है हठयोग और हद का सन्यास। सिर्फ़ घर–बार छोड़ जंगल में जाते हैं। द्वापर से भक्ति शुरू होती है। ज्ञान तो होता ही नहीं। ज्ञान माना सतयुग त्रेता। सुख। भक्ति माना अज्ञान और दुःख। यह अच्छी रीत समझाना होता है। फिर दुःख और सुख से परे जाना है। हद बेहद से पार। मनुष्य जांच करते हैं ना कहां तक समुद्र है, आसमान है, बहुत कोशिश करते हैं; परन्तु अन्त पा नहीं सकते हैं। एरोप्लेन से जाते हैं इसमें भी इतना तेल चाहिए ना जो फिर वापस भी लौट सकें। बहुत दूर तक जाते हैं; परन्तु बेहद में जा नहीं सकते। हद तक ही जावेंगे। तुम तो हद और बेहद से भी पार जाते हो। अभी तुम जो समझ सकते हो पहले नई दुनियां में हद है। बहुत थोड़े मनुष्य होते हैं। उनको सतयुग कहा जाता है। तुम बच्चों की बुद्धि में रचना के आदि मध्य अन्त की नॉलेज होनी चाहिए। यह नॉलेज और कोई में है नहीं। तुमको समझाने वाला बाप है जो बाप हद और बेहद से पार ...। और कोई समझा न सके। रचना के आदि–मध्य–अन्त का राज समझाते हैं, फिर कहते हैं इससे भी पार जाओ। वहां तो कुछ भी रहता नहीं। आसमान ही आसमान है। उनको कहा जाता है हद बेहद से भी पार। कोई अन्त तक नहीं पा सकते। कहेंगे बेअन्त2, कहना तो सहज है; परन्तु बेअन्त का अर्थ समझना चाहिए ना। अभी तुमको बाप समझ देते हैं। बाप कहते हैं मैं जो कुछ जानता हूँ बेहद को भी जानता हूँ। फलाने–2 धर्म फलाने–2 समय पर स्थापन हु(ये) हैं। दृष्टि जाती है सतयुगी हद तरफ, फिर जहाँ कुछ भी नहीं। फिर हम पार चले जावेंगे। सूर्य–चाँद के ऊपर हम जाते हैं, जहाँ हमारा शांतिधाम स्वीटहोम है। यूँ तो सतयुग भी स्वीटहोम है। शान्ति भी है तो .... भाग सुख भी है। दोनों ही हैं। घर जावेंगे तो वहाँ सिर्फ़ शान्ति होगी। सुख का नाम नहीं लेंगे। अभी तुम शांति भी स्थापन कर रहे हो और सुख भी स्थापन कर रहे हो। वहाँ शांति भी है, सुख का राज्य भी है। ....वतन में तो सुख की बात नहीं। तुम बच्चों की बुद्धि में यह सभी बातें हैं। दुनियां के मनुष्य नहीं जानते। आधा कल्प तुम्हारा राज्य चलता है, फिर आधा कल्प बाद रावण राज्य आता है। अशान्ति है ही 5 विकारों से। 2500 वर्ष तुम राज्य करते हो। फिर 2500 वर्ष बाद रावण राज्य होता है। उन्होंने तो लाखों वर्ष लिख दिया है। एकदम जैसे बुद्धू बना दिया है। 5000 वर्ष के कल्प को लाखों वर्ष कह देना बुद्धू पना कहेंगे ना। ज़रा भी सभ्यता नहीं है। देवताओं में कितनी दैवी सभ्यता थी। वह अभी असभ्यता हो पड़ी है। कुछ नहीं जानते। आसुरी गुण आ गये हैं। आगे तुम कुछ भी नहीं जानते थे। काम–कटारी चलाकर आदि–मध्य–अन्त दुःखी बना देते हैं। इसलिये इनको कहा ही जाता है रावण सम्प्रदाय। दिखाया है राम ने बन्दर सेना ली। अभी भगवान रामचन्द्र त्रेता का, वहां फिर बन्दर कहां से आये और फिर कहते हैं राम की सीता चुराई गई। ऐसी गन्दगी की बातें तो

वहां होती ही नहीं। जीव–जन्तु, जानवर आदि 84 लाख योनियाँ जितनी यहाँ हैं उतनी सतयुग–त्रेता में थोड़े ही होंगी। यह सारा बेहद का ड्रामा बाप बैठ समझाते हैं। बच्चों को बहुत दूरंदेशी बनना है। आगे तुमको कुछ भी पता नहीं था। मनुष्य होकर और नाटक को नहीं जानते! अभी तुम समझते हो सबसे बड़ा कौन है। ऊंच ते ऊंच भगवान..... (श्लोक) अभी तुम्हारे सिवाय और कोई मनुष्य की बुद्धि में नहीं है। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। बाप समझाते हैं हमारी बुद्धि कहां तक जाती है। हद और बेहद दोनों का राज़ समझाते हैं। इनसे पार कुछ भी है नहीं। वह है तुम्हारे रहने का स्थान, जिसको ब्रह्माण्ड अथवा ब्रह्म महतत्व कहते हैं। तुम यहां जैसे आकाश तत्व में बैठे हो। इनमें कुछ देखने में आता है क्या। नाम रख दिया है आकाश। है तो पोलार ही पोलार। रेडियो में भी कहते हैं आकाशवाणी। अभी यह आकाश तो बेअन्त है। अन्त पा नहीं सकते। तो आकाशवाणी कहने से मनुष्य क्या समझेंगे। यह जो मुख है वह है पोलार। इनसे वाणी निकलती है। मुख से आवाज निकलता है। यह 5 तत्वों का शरीर है ना। तो इस मुख से आवाज निकलता है। इसलिए रेडियो में आकाशवाणी कहा जाता है। यह तो कामन बात है और कोई आँख, नाक, कान से वाणी निकलेंगी क्या! मुख से ही आवाज निकलता है, जिसको आकाशवाणी कहा जाता है। बाप को भी इस आकाश द्वारा वाणी चलानी पड़े। तुम बच्चों को अपना भी सारा राज़ बताते हैं। तुमको निश्चय होता है, है बहुत सहज। जैसे हम आत्मा हैं वैसे बाप परमपिता परमात्मा है। ऊँच ते ऊँच आत्मा है ना। सभी को अपना–2 पार्ट मिला हुआ है। सबसे ऊँच ते ऊँच पार्ट इनको (ल॰ना॰) को मिला हुआ है। यह खेल है ना। नई दुनिया में रहने वालों में नम्बरवार कौन विजय माला में देखो। ऊपर में है फूल। फिर प्रवृत्ति मार्ग का युगल मेरू। फिर नम्बरवार माला देखो कितनी थोड़ी ...। फिर सृष्टि बढ़ते–2 कितनी बड़ी हो जाती है। अभी कहेंगे 500 करोड़ दाना अर्थात् आत्माओं की माला। .... सभी है पढ़ाई। बाप जो समझाते हैं उनको अच्छी रीत बुद्धि में धारण करो। झाड़ की डिटेल तो तुम सुनते (रह)ते हो। बीज ऊपर में है। यह वैराइटी झाड़ है। इनकी आयु कितनी है। झाड़ वृद्धि को पाता रहता है। रचयिता (और) रचना के आदि–मध्य–अन्त का राज़ सभी तुम बच्चों को समझाया है। सारा दिन बुद्धि में यही रहे। इस सृष्टि .... कल्प वृक्ष की आयु बिल्कुल एक्युरेट है। 5000 वर्ष से एक सेकण्ड का भी फर्क नहीं पड़ सकता। तुम बच्चों की बुद्धि में अभी कितनी नॉलेज है। जो अच्छे मजबूत हैं। मजबूत तब होंगे जब पवित्र होंगे। इस नालेज की (धार)णा के लिये सोने का बर्तन चाहिए। फिर ऐसा सहज हो जावेगा जैसे कि बाबा के लिये सहज है। फिर तुमको .... कहेंगे मास्टर नॉलेजफुल। नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार माला का दाना बन जावेगा। ऐसी2 बातें बाप बिगर (तो) कोई समझा न सके। यह आत्मा समझा रही है। बाप भी इस तन द्वारा ही समझाते हैं न कि ...वता के शरीर से। बाप एक ही बार आकर गुरू बनते हैं। फिर बाप को ही पार्ट बजाना होगा। 5000 वर्ष बाद आकर पार्ट बजावेंगे। बाप समझाते हैं ऊँच ते ऊँच मैं हूँ, फिर है मेरू। जो आदि में महाराजा–महारानी (थे) वह फिर अन्त में जाकर आदि देव बनेंगे। यह सारा ज्ञान तुम्हारी बुद्धि में है। तुम कहां भी समझाओ तो वन्डर खावेंगे। यह तो ठीक बताते हैं। मनुष्य सृष्टि का बीज रूप ही नालेजफुल है। उनके बिगर कोई नालेज दे नहीं सकता। यह सभी बातें धारण करनी हैं; परन्तु बच्चों को धारणा होती नहीं है। है बहुत सहज। कोई मुश्किलातें नहीं हैं। एक तो याद की यात्रा चाहिए हम में। जो फिर पवित्र बर्तन में रत्न ठहर सकें। यह हैं ऊँच ते ऊँच रत्न। बाबा तो व्यापारी था ना। बहुत अच्छा हीरा, माणिक आदि आता था तो चाँदी के डिब्बी, कपुस आदि में अच्छी रीत रखते थे। जो कोई भी खोलेंगे तो कहेंगे यह तो कोई फर्स्ट क्लास चीज़ है। यह भी ऐसे है। अच्छी चीज अच्छे बर्तन में शोभती है। तुम्हारी कान सुनती है उनमें धारण होते है। ....र होगा, बुद्धि योग बाप से होगा तो धारणा अच्छी होगी, नहीं तो सभी निकल जावेंगे। आत्मा का रूप भी कितना छोटा है। ज्ञान उनमें कितना भरा हुआ है। कितना अच्छा शुद्ध बर्तन चाहिए। कोई संकल्प भी न उठे। उल्टा सुल्टा संकल्प सभी बन्द हो जानी चाहिए। सभी तरफ़ से बुद्धि योग हटाना है। मेरे साथ योग लगाते2

बर्तन सोना बना दो जो रत्न ठहर सकें। फिर दूसरों को दान करते रहेंगे। भारत वो महादानी माना जाता है। वह धन दान तो बहुत करते हैं; परन्तु यह है अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान। देह सहित जो कुछ है सभी छोड़कर एक के साथ बुद्धि योग रहे। हम तो बाप के हैं। इसमें ही मेहनत लगती है। एमऑबजेक्ट तो बाप बता देते हैं। पुरूषार्थ करना बच्चों का काम है। तब ही इतना ऊँच पा सकेंगे। कोई भी उल्टा–सुल्टा विकल्प न आये। बाप है ज्ञान का सागर। हद–बेहद से पार। सभी बैठ समझाते हैं। तुम समझते हो बाबा हमको देखते हैं, परन्तु मैं तो हद और बेहद से ऊपर चला जाता हूँ। मैं रहने वाला भी वहाँ का हूँ। तुम भी हद बेहद से पार चले जाओ। संकल्प–विकल्प कुछ भी न आये। इसमें मेहनत चाहिए। गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र बनना है। कम कार डे दिल यार डे। गृहस्थी जितना उठाते हैं उतना घर में रहने वाले भी नहीं उठाते हैं। सेन्टर चलाने वाले, मुरली चलाने वाले भी नापास हो जाते हैं और पढ़ने वाले ऊँच चले जाते हैं। आगे चल तुमको सब मालूम पड़ता जावेगा। बाबा बिल्कुल ठीक बताते हैं। हमको जो पढ़ाती थी उनको माया खा गई। महारथी को माया एकदम हप कर गई। है नहीं। मायावी ट्रेटर बन जाते हैं। विलायत में भी ट्रेटर बन जाते हैं। कहां2 जाकर शरण लेते हैं। जो पावरफुल होते हैं उस तरफ़ चले जाते हैं। इस समय तो मौत सामने है ना। तो बहुत ताकत वाले पास जावेंगे। अभी तुम समझते हो बाप ही पावरफुल है। बाप है सर्वशक्तिवान। हमको सिखलाते–2 सारे विश्व का मालिक बनाये देते हैं। वहां सभी कुछ मिल जाता है। कोई अप्राप्त वस्तु नहीं होती जिसके प्राप्ती के लिये पुरूषार्थ करें। वहां कोई ऐसी चीज़ होती नहीं जो तुम्हारे पास न हो। सो फिर नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार ही पद पाते हैं। बाप बिगर ऐसी बातें कोई नहीं जानते हैं। सभी हैं पुजारी। भल बड़े2 शंकराचार्य आदि हैं। बाबा उन्हों की महिमा भी सुनाते हैं पहले पवित्रता की ताकत से भारत को अच्छा थमाने निमित्त बनते हैं। सो भी जब सतोप्रधान थे। अभी तो तमोप्रधान हैं। उनमें क्या ताकत रखी है। शंकराचार्य खुद दिखाते हैं हम पुजारी हैं। सभी चित्र आदि रखते हैं। पूज्य एक भी नहीं है। अभी तुम जो पुजारी थे सो फिर पूज्य बनने पुरूषार्थ कर रहे हो। बाप ने समझाया है तुम पहले अव्यभिचारी पुजारी थे। एक की ही पूजा करते थे। पहले2 जब वाममार्ग शुरू होता है तब तुम पूज्य से पुजारी बनते हो। हिस्ट्री–जॉग्राफी फिर रिपीट होती है। अभी तुम्हारी बुद्धि में सारा ज्ञान है। है तो सेकण्ड का। बुद्धि में धारण रहे और तुम समझाते रहो। बाप ही सारे झाड़ के आदि–मध्य–अन्त का राज़ बताते हैं। बच्चों को भी बहुत मीठा बनने का है। युद्ध है ना। माया के तूफान भी बहुत आते हैं। यह सहन करना पड़ता है। बाप की याद में रहने से तूफान भी चले जावेंगे। हातमताई का खेल दिखाते हैं ना। मुहरा डालते थे और माया चली जाती थी। मुहरा निकलने से ही माया आ जाती थी। छुईमुई होती है ना। हाथ लगाओ तो मुरझाये जाती है। माया बड़ी तीखी है। इतना ऊँच पढ़ाई पढ़ते2 बैठे2 गिरा देती है। इसलिये बाप समझाते रहते हैं अपन को भाई2 समझो। तो फिर हद बेहद से पार चले जावेंगे। शरीर ही नहीं है तो फिर दृष्टि कहाँ जावेगी। इतनी मेहनत करनी है। सुनकर फां नहीं हो जाना है। कल्प कल्प तुम्हारा पुरूषार्थ चलता है और तुम अपना भाग्य पाते हो। बाप कहते हैं पढ़ा हुआ सभी भूलो। बाकी जो कुछ नहीं पढ़े हो यह सुनो और याद करो। उनको कहा जाता है भक्ति मार्ग का भूसा। वह पढ़ते–2 मनुष्य भूसे जैसे बन गये हैं। तुम राजऋषि हो ना। जटाएँ खुला हुआ हो और मुरली चलाओ। साधु–सन्त आदि जो सुनाते हैं वह सब मनुष्यों की मुरली। यह है बेहद की बाप की मुरली। सतयुग त्रेता में तो ज्ञान की मुरली की दरकार नहीं है। वहां ज्ञान की भक्ति की दरकार नहीं है। यह ज्ञान तुमको मिलता ही एक संगमयुग पर है। बाप ही देने वाला है। अच्छा, रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग और नमस्ते।